वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :5 अंक : 241 | शनिवार 17 जनवरी 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

राष्ट्रपति मुर्मु 1008 कुण्डीय हनुमान महायज्ञ में दी पूर्णाहूति, देश की सुख-समृद्धि की कामना की

जयपुर. शाबाश इंडिया

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु शुक्रवार को एक दिवसीय यात्रा पर जयपुर पहुंची। मुर्मु सीकर रोड स्थित नींदड़ में 1008 कुण्डीय हनुमान महायज्ञ और श्रीराम कथा में शामिल हुई। उन्होंने जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज के सानिध्य में मंत्रोच्चार के साथ विश्वकल्याण के लिए हवन में पूर्णाहुति दी। इस दौरान राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े एवं मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा भी मौजूद रहे। इस दौरान राष्ट्रपति ने महायज्ञ में पूजा-अर्चना कर देश-प्रदेश की सुख समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की। इसके बाद राष्ट्रपति, राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री ने यज्ञशाला की परिक्रमा लगाई। इस दौरान राष्ट्रपति ने जगद्गुरु रामभद्राचार्य जी से मुलाकात कर उनका अभिनंदन भी किया। इससे पहले जयपुर एयरपोर्ट पहुंचने पर पुष्पगुच्छ भेंट कर मुख्यमंत्री ने राष्ट्रपति की अगवानी की। इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी व डॉ. प्रेमचंद बैरवा, सांसद मदन राठौड़, मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास, पुलिस महानिदेशक राजीव कुमार शर्मा सहित अन्य उच्च अधिकारी उपस्थित रहे।

राष्ट्रपति ने जगद्गुरु रामभद्राचार्य जी से मुलाकात की

स्वर्ग से सुंदर है सारस्वताचार्य श्री 108 देवनन्दि जी गुरुदेव की प्रेरणा से निर्मित णमोकार तीर्थः अभिषेक पाटील

णमोकार तीर्थ (महाराष्ट्र). शाबाश इंडिया

सारस्वताचार्य श्री 108 देवनन्दि जी गुरुदेव की प्रेरणा से निर्मित 'णमोकार तीर्थ' स्वर्ग से भी सुंदर है। परम पूज्य प्रज्ञाश्रमण, सर्वोदयी राष्ट्रसंत सारस्वताचार्य श्री 108 देवनन्दि जी गुरुदेव की यह मंगल भावना रही है कि एक ऐसे तीर्थ का उदय हो, जहाँ णमोकार महामंत्र संबंधी विशेष अनुसंधान हो। जहाँ इस महामंत्र में समाहित पंचपरमेष्ठी–अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय एवं साधु परमेष्ठी की साकार प्रतिमाओं के साथ उनके गुणों का भी चित्रण हो। यह तीर्थ 'रत्नत्रय' रूप हो, जहाँ श्रद्धा, शिक्षा एवं सेवा का अनूठा संगम हो तथा विश्वास, विद्या एवं वात्सल्य की त्रिवेणी भी प्रवाहित हो। परम पूज्य आचार्य श्री के मन में विगत कई वर्षों से चल रहे इस शुभ संकल्प को वर्ष 2013 में श्री क्षेत्र कचनेरजी में मूर्त रूप देने का कार्य प्रारंभ किया गया। परिणामस्वरूप, इस परम तीर्थ के लिए नासिक-धुलिया (मुंबई-दिल्ली) महामार्ग क्रमांक 3 पर स्थित 'मालसाने' में चालीस एकड़ के विशाल भूखंड का चयन किया गया। अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद, कोल्हापुर के कार्याध्यक्ष श्री अभिषेक अशोक पाटील ने बताया कि णमोकार तीर्थ में पंचपरमेष्ठी की विशाल प्रतिमाएं स्थापित की गई हैं। यहाँ 51 फीट ऊँची अरिहंत परमेष्ठी की मुख्य प्रतिमा और शेष चार परमेष्ठियों (सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु) की 31-31 फीट ऊँची प्रतिमाएं निर्मित की गई हैं। यहाँ 108 फीट ऊँचा और 7 मंजिला भव्य 'समवशरण' बनाया गया है, जिसमें मूलनायक भगवान चंद्रप्रभु जी की 11 फीट की पद्मासन प्रतिमा विराजमान है। जैन संस्कृति के इतिहास को भगवान चंद्रप्रभु की इसी प्रतिमा में समाहित किया गया है, जिसमें 16 स्वप्न, अष्टमंगल प्रातिहार्य, 24 तीर्थंकर प्रतिमाएं, यक्ष-यक्षिणी, श्रुतस्कंध यंत्र, 12 राशियां और 27 नक्षत्रों का अंकन है।

समवशरण की रचना में विभिन्न भूमियों का समावेश है...

चैत्य भूमिः जहाँ भव्य मानस्तंभ, विद्याधर विमान और देव विमान बनाए गए हैं।
जल भूमिः यहाँ नौका विहार और बाहर टॉय ट्रेन के माध्यम से समवशरण की परिक्रमा की सुविधा है।
उपवन भूमिः जिसमें सुंदर बगीचे विकसित किए गए हैं।
ध्वज भूमिः यहाँ 24 तीर्थंकरों के प्रतीक ध्वज लहराएंगे।
कल्पवृक्ष एवं भवन भूमिः यहाँ तीर्थंकरों के जीवन से संबंधित सजीव झांकियों की रचना की जाएगी।

नरसिंहपुरा जैन सोशल ग्रुप का वार्षिक स्नेह मिलन समारोह संपन्न

प्रतापगढ़/शाबाश इंडिया

नरसिंहपुरा जैन सोशल ग्रुप का वार्षिक स्नेह मिलन समारोह मकर संक्रांति के अवसर पर हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। ग्रुप के प्रवक्ता संजय पटवा ने बताया कि कार्यक्रम का आयोजन सीमांधर स्वामी जिनालय (जैन बोर्डिंग) में किया गया। समारोह की शुरूआत णमोकार मंत्र के सामूहिक पाठ के साथ हुई। इसके पश्चात ग्रुप के सदस्यों के लिए विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें गिल्ली-डंडा और चेयर रेस जैसे खेलों में सभी ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। खेलों के बाद आयोजित ग्रुप की आधिकारिक बैठक में कोषाध्यक्ष मनीष जैन ने वर्षभर का आय-व्यय विवरण (बजट) प्रस्तुत किया। इस अवसर पर संरक्षक राजेश कोठारी, पूर्व अध्यक्ष श्याम जैन और वर्तमान अध्यक्ष राजेश जैन ने अपने विचार व्यक्त करते हुए ग्रुप की गतिविधियों की सराहना की। प्रतियोगिताओं में विजयी रहे सदस्यों को अतिथियों द्वारा पारितोषिक वितरित किए गए। कार्यक्रम का सफल संचालन सचिव उज्ज्वल जैन ने किया। अंत में जैन बोर्डिंग में विराजित माताजी की आरती के साथ समारोह का विधिवत समापन हुआ।

जैन सोशल ग्रुप 'स्वास्तिक' द्वारा नवकार महामंत्र जाप का पावन आयोजन

उदयपुर/शाबाश इंडिया

जैन सोशल ग्रुप 'स्वास्तिक' के तत्वावधान में आज नवकार महामंत्र के सामूहिक जाप का एक अत्यंत पावन और आध्यात्मिक आयोजन समूह के अध्यक्ष संजय धाकड़ के निवास स्थान पर श्रद्धा और भक्ति के साथ संपन्न हुआ। इस दिव्य अवसर पर समूह के सदस्यों ने पूर्ण आस्था, अनुशासन और भावनात्मक जुड़ाव के साथ सहभागिता कर वातावरण को भक्तिमय बना दिया। कार्यक्रम में संस्थापक अध्यक्ष धीरज छाजेड़ ने नवकार महामंत्र की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह महामंत्र अनादि काल से मानव जीवन को सदाचार, संयम और आत्मिक शुद्धता की दिशा प्रदान करता आया है। उन्होंने बताया कि नवकार महामंत्र का जाप मन को गहन शांति, आत्मा को स्थिरता तथा जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है। यह महामंत्र ब्रह्मांड में स्थित समस्त अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय एवं साधु-साध्वियों को नमन करता है, जिनके दिव्य आशीर्वाद से जीवन की बाधाएं दूर होकर कार्य सिद्धि का मार्ग प्रशस्त होता है।

इस आध्यात्मिक आयोजन में शशिपाल जैन, गौरव सुराणा, पंकज जैन, यशवंत तलेसरा, धीरज छाजेड़, संजय धाकड़, वीरेंद्र कावड़िया, राजेंद्र मेहता, प्रभात भंडारी एवं अंकुर लोढ़ा सहित अन्य सदस्यों ने सक्रिय रूप से सहभागिता निभाई। वहीं, मातृशक्ति के रूप में चंचल छाजेड़, अनीता धाकड़, कविता सुराणा, विश्रुया जैन, सरला मेहता, भावना कावड़िया, ऊषा तलेसरा, नीलम भंडारी, सरोज जैन एवं मीनाक्षी जैन की गरिमामयी उपस्थिति ने आयोजन को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया। कार्यक्रम के दौरान उपाध्यक्ष गौरव सुराणा ने सभी उपस्थित सदस्यों से नवकार महामंत्र के नियमित जाप को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाने का आह्वान किया। अध्यक्ष संजय धाकड़ ने अपने उद्बोधन में कहा कि आयोजन का संपूर्ण वातावरण दिव्य शक्ति और सकारात्मकता से ओत-प्रोत रहा। अंत में सभी सदस्यों ने भविष्य में भी ऐसे आध्यात्मिक कार्यक्रमों को निरंतर आयोजित करने का संकल्प लिया, ताकि समाज में आध्यात्मिक चेतना एवं सद्भावना का प्रसार होता रहे। यह आयोजन न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक बना, बल्कि सामूहिक एकता और आत्मिक शुद्धता का संदेश देकर सभी के हृदय पर अमिट छाप छोड़ गया।

केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय की राज्यस्तरीय शास्त्रीय प्रतियोगिता में दिगम्बर जैन महाविद्यालय के छात्रों का दबदबा

जयपुर. शाबाश इंडिया

केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित राज्यस्तरीय शास्त्रीय प्रतियोगिता (सत्र 2025-2026) में श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, सांगानेर (जयपुर) के छात्रों ने अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन से महाविद्यालय का गौरव बढ़ाया है। प्रतियोगिता के विभिन्न विषयों में महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त कर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। उपलब्धियों का विवरण इस प्रकार है...

प्रथम स्थानः सिमी जैन (जैन-बौद्ध भाषण), मिनी जैन (भारतीय विज्ञान भाषण) तथा आयुषी जैन-पुत्री श्री नीरज जी (आयुर्वेद भाषण)।

द्वितीय स्थानः प्राप्ति चंदेरिया (ज्योतिष भाषण), आगम जैन (धर्मशास्त्र भाषण) एवं खुशबू जैन (अमरकोश कंठपाठ)।

तृतीय स्थानः अतिशय जैन (साहित्य भाषण), अरिहंत जैन (न्याय भाषण) तथा आयुषी जैन-पुत्री श्री पवन जी (व्याकरण भाषण)।

विद्यार्थियों का यह शानदार प्रदर्शन साहित्यिक प्रभारी रुचि कुमारी और सह-प्रभारी वर्षा जैन के कुशल मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. अनिल कुमार जैन एवं समस्त शैक्षणिक स्टाफ ने विजेता छात्र-छात्राओं को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना की है।

अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज एवं उपाध्याय पियूष सागरजी महाराज के गुलाबी नगरी जयपुर की ओर बढ़ते कदम

'अकेले रहने, चलने और खड़े रहने का साहस रखो, क्योंकि अपने लोग वक्त पर ज्ञान तो देते हैं, पर साथ नहीं!': अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज

औरंगाबाद/जयपुर-दिल्ली हाईवे. शाबाश इंडिया। अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज एवं उपाध्याय श्री पियूष सागरजी महाराज की 'अहिंसा संस्कार पदयात्रा' राजस्थान की गुलाबी नगरी जयपुर की ओर निरंतर अग्रसर है। इसी श्रृंखला में उपस्थित गुरु भक्तों को संबोधित करते हुए आचार्य श्री ने एक प्रेरक दृष्टांत के माध्यम से अहंकार के त्याग का संदेश दिया। अहंकार और व्यवहार पर आचार्य श्री के विचारः आचार्य श्री ने कहा कि एक बच्चा अकड़ में खड़ा था और कह रहा था– ₹मैं झुकूंगा नहीं।₹ कुछ देर बाद उसके हाथ से चॉकलेट नीचे गिर गई, लेकिन वह अपनी जिद्द पर अड़ा रहा। तभी दूसरा बच्चा आया और चॉकलेट उठाकर भाग गया। तब वह बच्चा अपनी चॉकलेट पाने के लिए उसके पीछे दौड़ने लगा।

आचार्य श्री ने समझाया कि हम भी कई बार सब समझते हुए भी अहंकार और बेकार की जिद्द में अड़े रहते हैं। यही झूठा गुमान हमें अपनों से दूर कर देता है। हालांकि गलत के सामने टिके रहना जरूरी है, लेकिन हर जगह अड़ना समझदारी नहीं। जैसे फुटबॉल को तेजी से आगे बढ़ाने के लिए खिलाड़ी पहले कुछ कदम पीछे जाता है, वैसे ही सफलता के लिए कभी-कभी हमें भी विनम्र होना पड़ता है। 'सिंह निष्क्रीड़ित व्रत' भी हमें यही सिखाता है– दो कदम पीछे हटना ताकि चार कदम आगे बढ़ा जा सके। जब लक्ष्य बड़ा हो, तो तालमेल बिठाना, अपनी गलती सुधारना और मैत्रीपूर्ण वातावरण बनाना 'झुकना' नहीं, बल्कि 'कार्य सिद्धि' का मार्ग है।

पद विहार सूचनाः परम पूज्य गुरुदेव अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज ससंघ का भव्य मंगल विहार 16 जनवरी 2026, शुक्रवार को सुबह 7:00 बजे आचार्य रत्न देशभूषण आश्रम, अचरोल (जयपुर) से दुर्गा माता मंदिर ट्रस्ट, कूकस (जयपुर) की ओर हुआ। यह पद विहार लगभग 14.5 किलोमीटर का रहा।

– प्रेषकः नरेंद्र अजमेरा, पियूष कासलीवाल (औरंगाबाद)

वेद ज्ञान

मनोभावों का दर्पण है हमारा चेहरा

किसी ने ठीक ही कहा है कि भ्रांतियां मनुष्य की स्वनिर्मित और स्वनिर्धारित हैं, जिनमें वह एक को भला और दूसरे को बुरा बताता है, अन्यथा सृष्टा की हर संरचना अपने में विशिष्टता धारण किए हुए है। मुनष्य ही है, जो जिसके साथ चाहता है, प्रभावित होकर अपनत्व बढ़ाता, घनिष्ठता जोड़ता और राग-द्वेष का आरोपण कर लेता है, घृणा या प्रेम करता है, जबकि वस्तुतः ऐसा है नहीं। सभी प्राणी एवं वस्तुएं नियति के किसी महान उद्देश्य की पूर्ति के लिए रची गई हैं। उनकी अपनी-अपनी विशिष्टता एवं महत्ता है। यही तथ्य मनुष्य पर भी लागू होता है। दृष्टिकोण का परिवर्तन मनःस्थिति को भी बदलकर रख देता है। मान्यताओं के बदलते ही घृणा के स्थान पर प्रेम की रसानुभूति होते देर नहीं लगती। सर्वत्र दृष्टिगोचर होने वाली व्यथाओं का कारण मनुष्य की अपनी स्वनिर्मित मान्यताएं ही हैं। किन वस्तुओं या व्यक्तियों के प्रति, किसी का राग-द्वेष, कितनी प्रगाढ़ता लिए हुए है, उसके चेहरे पर या आंखों में झांकने पर इसकी स्पष्ट झांकी हो सकती है। कारण मन की प्रसन्नता-अप्रसन्नता, प्रियता-अप्रियता व्यक्त करने के यही दोनों दर्पण की भूमिका निभाते हैं। यह अपने हाव-भाव के पीछे गूढ़ रहस्य जो छिपाए बैठे होते हैं। मनोविज्ञानी इस तथ्य को भलीभांति जानते हैं और कहते हैं कि मन और शरीर सहजीवी की तरह हैं। एक का दूसरे के साथ बड़ा ही घनिष्ठ संबंध है और दोनों मिलकर चेहरे पर प्रसन्नता या दुःख की झलकियां प्रस्तुत करते हैं। यही कारण है कि मनोचिकित्सक चेहरा देखते ही भांप जाते हैं कि व्यक्ति किस व्यथा से पीड़ित है। विकृत दृष्टिकोण धीरे-धीरे मन को अपनी गिरफ्त में पूरी तरह जकड़ लेता है और उसे तनावग्रस्त बना देता है। इसका प्रभाव सौंदर्य पर भी पड़ता है और स्थूल रूप से स्वस्थ दिखते हुए भी व्यक्ति कुरूप लगने लगता है। विषाक्त प्रवृत्ति को ढंकने का प्रयत्न करती है, फलस्वरूप व्यक्ति बाह्य जगत में कृत्रिम चेहरा बनाने का प्रयत्न करता है, कि तनावयुक्त मांसपेशियां विशेष प्रकार की स्थिति से ग्रस्त होकर कठोर बन गई हैं। ओंठ एवं तनी भौंहें अंततः यही सिध्द करती हैं कि व्यक्ति किन्हीं विशेष मनःस्थितियों में उलझा है। ईष्या, द्वेष एवं घृणा की स्थिति में मन के धरातल में कंपन शीघ्र होने से नए-नए कुविचार शीघ्रता से उठते हैं, जबकि शांत एवं स्थिर मन तटस्थ चिंतन करता है।

संपादकीय

समय लोकतांत्रिक परीक्षा का...

दिल्ली में मकर संक्रांति पर आयोजित पोंगल महोत्सव के मंच से प्रधानमंत्री का यह कथन कि राष्ट्र निर्माण में किसानों का महत्वपूर्ण योगदान है, केवल एक सांस्कृतिक या औपचारिक वक्तव्य नहीं था, बल्कि यह भारत की आत्मा, अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना की ओर संकेत करने वाला राजनीतिक-वैचारिक संदेश था। पोंगल, जो कृषि, प्रकृति और श्रम के सम्मान का उत्सव है, उसी भारत का प्रतीक है जिसकी जड़ें खेतों में हैं।

किंतु इसी कालखंड में प्रकाशित सेंटर फॉर स्टडी ऑफ सोसाइटी एंड सेक्युलरिज्म (सीएसएसएस) की ताजा मॉनिटरिंग रिपोर्ट एक ऐसे भारत की तस्वीर पेश करती है, जहाँ सांप्रदायिक दंगों में गिरावट के बावजूद मॉब लिंचिंग, नफरत आधारित अपराध और पहचान-केंद्रित हिंसा अब भी लोकतंत्र के लिए गंभीर चुनौती बने हुए हैं। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, जिसकी सामाजिक संरचना बहुधर्मी बहुभाषी और बहु सांस्कृतिक ताने-बाने से निर्मित है। ऐसे समाज में सांप्रदायिक सौहार्द केवल आंतरिक स्थिरता का प्रश्न नहीं, बल्कि वैश्विक लोकतांत्रिक विश्व के लिए एक नैतिक और राजनीतिक संकेतक भी है, इसलिए, यह लेख इन्हीं दो समानांतर सच्चाइयों, आशा और चिंता के बीच भारत के समकालीन सामाजिक- राजनीतिक परिदृश्य का अंतर्राष्ट्रीय दृष्टि से विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह लेख सीएसएसएस की रिपोर्टिंग पर आधारित है इसकी सटीकता को प्रमाणित नहीं किया जा सकता। साथियों बात अगर हम कृषि और राष्ट्र-निर्माणः भारतीय सभ्यता की आधारशिला इसको समझने की करें तोभारत में कृषि केवल एक आर्थिक गतिविधि नहीं, बल्कि एक सभ्यतागत संरचना है। सिंधु घाटी से लेकर आधुनिक भारत तक, किसान समाज की स्थिरता, खाद्य सुरक्षा और सांस्कृतिक निरंतरता का मूल आधार रहा है। प्रधानमंत्री का पोंगल मंच से दिया गया वक्तव्य इसी ऐतिहासिक सत्य को पुनःरेखांकित करता है। वैश्विक संदर्भ में देखें तो आज जब विकसित देश भी खाद्य आत्मनिर्भरता को राष्ट्रीय सुरक्षा का हिस्सा मान रहे हैं, भारत का किसान- केंद्रित विमर्श उसे एक स्थायी विकास मॉडल के रूप में प्रस्तुत करता है। अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएँ जैसे एफएओ और विश्व बैंक भी मानती हैं कि भारत की कृषि व्यवस्था तमाम चुनौतियों के बावजूद, वैश्विक खाद्य संकट के दौर में एक स्थिर स्तंभ बनी हुई है। पोंगल केवल तमिल संस्कृति का पर्व नहीं, बल्कि यह श्रम, प्रकृति और समुदाय के सामूहिक उत्सव का प्रतीक है। जब प्रधानमंत्री जैसे संवैधानिक पद पर आसीन व्यक्ति इस पर्व के माध्यम से किसानों को राष्ट्र निर्माण का नायक बताते हैं तो यह संदेश केवल घरेलू नहीं बल्कि वैश्विक भी होता है। यह भारत को एक ऐसे देश के रूप में प्रस्तुत करता है जहाँ विकास का मॉडल जमीनी स्तर से जुड़ा है। किंतु यही समावेशी सांस्कृतिक संदेश तब कमजोर पड़ता है, जब समाज के भीतर पहचान आधारित हिंसा और नफरत की राजनीति सामाजिक ताने-बाने को चोट पहुँचाती है।

परिदृश्य

माँ-बाप की नीयत

भारतीय समाज में माता-पिता को सर्वोच्च नैतिक स्थान प्राप्त है। उन्हें त्याग, तपस्या और निस्वार्थ प्रेम का प्रतीक माना जाता है। बचपन से ही यह सिखाया जाता है कि माँ-बाप कभी गलत नहीं हो सकते। उनकी हर बात आदेश है, हर निर्णय अंतिम सत्य। लेकिन बदलते सामाजिक परिदृश्य में यह धारणा अब कई सवालों के घेरे में है। आज जब पारिवारिक विघटन, तलाक, अलगाव और घरेलू तनाव की घटनाएँ बढ़ रही हैं, तब यह जरूरी हो गया है कि हम ईमानदारी से यह स्वीकार करें माँ-बाप भी हमेशा सही नहीं होते। आज अनेक परिवारों में टूटन का कारण केवल पति-पत्नी के बीच का मतभेद नहीं है, बल्कि उसके पीछे माता-पिता की भूमिका भी उतनी ही निर्णायक होती जा रही है। यह कहना कठोर लग सकता है, लेकिन सच्चाई यही है कि कई घरों में माता-पिता द्वारा किया गया पक्षपात, हस्तक्षेप और नियंत्रण रिश्तों को भीतर से खोखला कर रहा है। सबसे पहले बात करते हैं भेदभाव की संस्कृति की। भारतीय परिवारों में यह कोई नई बात नहीं है कि बच्चों के बीच तुलना और पक्षपात होता रहा है। बड़ा बेटा वारिस माना जाता है, छोटा समझौता करता है, बेटी पराया धन होती है और बहू बाहरी। यही सोच जब व्यवहार में उतरती है, तो घर में स्थायी तनाव पैदा हो जाता है। माता-पिता अनजाने में या जानबूझकर एक बेटे के पक्ष में खड़े हो जाते हैं, दूसरे को उपेक्षित कर देते हैं। बहू को हर विवाद की जड़ मान लिया जाता है, जबकि बेटी के दोष पर पर्दा डाल दिया जाता है। यह असमानता रिश्तों को धीरे-धीरे तोड़ देती है। विवाह के बाद बहू का स्थान आज भी कई घरों में संदिग्ध बना रहता है। उससे उम्मीद की जाती है कि वह बिना सवाल किए हर परंपरा को स्वीकार करे, हर निर्णय माने और अपनी पहचान को त्याग दे। यदि वह अपने अधिकार, सम्मान या स्वतंत्रता की बात करती है, तो उसे घर तोड़ने वाली करार दे दिया जाता है। जबकि सच्चाई यह है कि कई बार घर पहले ही भीतर से टूट चुका होता है-सिर्फ दिखावा बचा होता है। माता-पिता का अत्यधिक हस्तक्षेप भी आज पारिवारिक विघटन का बड़ा कारण बन रहा है। बेटे-बहू के निजी मामलों में दखल देना, छोटी-छोटी बातों को तूल देना, बहू की शिकायतों को नजरअंदाज करना और बेटे को भावनात्मक दबाव में रखना-ये सब स्थितियाँ विवाह को बोझ बना देती हैं। बेटा अक्सर दो पाटों के बीच फँस जाता है। एक ओर पत्नी, दूसरी ओर माता-पिता। और समाज उसे यही सिखाता है कि माता-पिता का साथ देना ही धर्म है, चाहे इसके लिए दांपत्य जीवन की बलि क्यों न देनी पड़े। यह भी देखने में आता है कि बेटी की शादी के बाद भी माता-पिता उसे अपने नियंत्रण में रखना चाहते हैं। बेटी को बार-बार मायके बुलाकर, उसके वैवाहिक जीवन में हस्तक्षेप कर, दामाद के खिलाफ राय बनाकर, वे अनजाने में बेटी का घर कमजोर कर देते हैं। नतीजा यह होता है कि बेटी और दामाद के बीच अविश्वास पनपता है, और अंततः रिश्ता टूटने की कगार पर पहुँच जाता है। एक और गंभीर पहलू है भावनात्मक ब्लैकमेल। हमने तुम्हारे लिए क्या-क्या नहीं किया, हमारे कारण तुम इस मुकाम पर हो, अगर हमारी बात नहीं मानी तो लोग क्या कहेंगे-ऐसे वाक्य बच्चों को मानसिक रूप से जकड़ लेते हैं। वे अपनी खुशी, अपने रिश्ते और अपने सपनों की कीमत पर भी माता-पिता को खुश रखने की कोशिश करते हैं। लेकिन यह दबा हुआ असंतोष किसी न किसी दिन विस्फोट बनकर सामने आता है। समस्या तब और गंभीर हो जाती है जब समाज भी इस मानसिकता को बढ़ावा देता है। सबसे पहले सवाल बहू से किया जाता है-क्या किया तुमने? बेटे को मजबूर मान लिया जाता है और माता-पिता को पीड़ित।

आचार्य श्री 108 प्रसन्न सागर जी महाराज का देशभूषण आश्रम, अचरोल में मंगल प्रवेश

अचरोल (जयपुर). शाबाश इंडिया

परम पूज्य साधना महोदधि, अन्तर्मना आचार्य श्री 108 प्रसन्न सागर जी मुनिराज ससंघ (15 पिच्छिका) का चंदवाजी से विहार कर 15 जनवरी को सायं 4:15 बजे दिल्ली रोड स्थित देशभूषण आश्रम में भव्य मंगल आगमन हुआ। आश्रम आगमन पर श्राविकाओं ने मंगल कलश सिरोधार्य कर गुरुदेव की अगवानी की। इस अवसर पर ट्रस्टी नेमप्रकाश, देवप्रकाश, संतकुमार, श्रीबाबू खण्डाका, रूपेंद्र छाबड़ा, राजीव गाजियाबाद, नवीन संघी, सूर्य प्रकाश छाबड़ा, मनीष बैद, सतीश खण्डाका सहित अनेक श्रद्धालुओं ने आचार्य संघ की सत्कारपूर्वक अगवानी की। आचार्य श्री ने ससंघ भगवान के दर्शन किए और उपस्थित

अपार जनसमूह को अपने मंगल उद्बोधन से लाभान्वित किया। उन्होंने आगामी 25 जनवरी से 1 फरवरी तक आयोजित होने वाले श्री 1008 चारित्र शुद्धि विधान की महिमा पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इस विधान से श्रावकों के जीवन की दिशा और दशा बदल सकती है। आचार्य श्री ससंघ का रात्रि विश्राम देशभूषण आश्रम में ही रहा।

– प्रेषक: रूपेंद्र छाबड़ा

जैन सोशल ग्रुप कैपिटल का पतंगबाजी महोत्सव उल्लास के साथ संपन्न

जयपुर. शाबाश इंडिया

जैन सोशल ग्रुप कैपिटल द्वारा शास्त्री नगर स्थित जनोपयोगी भवन में 'पतंगबाजी महोत्सव' का भव्य आयोजन किया गया। इस महोत्सव में 200 से अधिक सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, जिससे यह आयोजन पारिवारिक सौहार्द और सामूहिक आनंद का अनूठा प्रतीक बना। कार्यक्रम स्थल पर की गई आकर्षक सजावट, आकाश में लहराती रंग-बिरंगी पतंगें, मनोरंजक कपल गेम्स और डीजे की सुमधुर लहरियों ने सभी को आनंदित कर दिया। कार्यक्रम का कुशल संचालन एंकर शिखा जैन द्वारा किया गया। इस विशेष अवसर पर समूह में सम्मिलित हुए 10 नए सदस्यों का आत्मीय स्वागत भी किया गया। सायंकाल सुरुचिपूर्ण भोजन के पश्चात लोहड़ी का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। लकी ड्रा एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को संस्थापक श्री सुभाष जी एवं अध्यक्ष श्री राजकुमार संतोष काला द्वारा पुरस्कृत कर सम्मानित किया गया। महोत्सव के सफल आयोजन में संयोजक श्री विनोदझसुधा जैन, डॉ. मनीषझअनीता जैन, श्री विमलझरेखा जैन तथा सह-आयोजक श्री जयकुमारझसरला, श्री अजयझ बबीता गंगवाल, श्री नितिनझसारिका एवं श्री ऋषभझनिशा का विशेष योगदान रहा। अध्यक्ष राजकुमार संतोष काला एवं सचिव श्री प्रमोद-सुनीता जैन ने कार्यक्रम की सफलता के लिए सभी सहयोगकर्ताओं का आभार व्यक्त किया।

– जैन सोशल ग्रुप कैपिटल, जयपुर

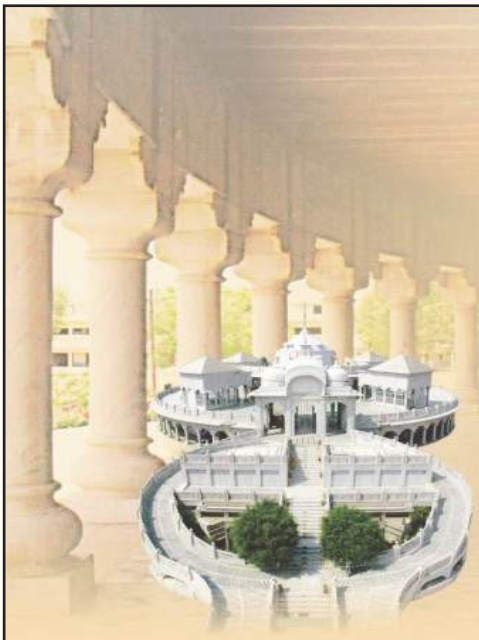

|| श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः ||
पद्मपुरा
पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव
दिनांक 18 से 22 फरवरी 2026
श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा नवनिर्मित खड्गासन चौबीसी
एवं
पद्मबल्लभ शिखर कलश - ध्वजारोहण महामहोत्सव
श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र
पद्मपुरा (बाड़ा) जयपुर, राजस्थान
: पावन सान्निध्य :
वात्सल्य वारिधि पंचम पट्टाचार्य 108 श्री वर्धमानसागर जी महाराज ससंघ
: पावन प्रेरणा :
गणिनी आर्यिका 105 श्री स्वस्तिभूषण माताजी ससंघ
प्रतिष्ठाचार्य : पं. हँसमुख जी जैन (धरियावद) राज.
: पावन सान्निध्य :
वात्सल्य वारिधि
पंचम पट्टाचार्य 108 श्री वर्धमानसागर जी महाराज
ससंघ
पधारो
पद्मपुरा बाड़ा
जहां धर्म की ज्योति प्रज्ज्वलित होती है
: पावन प्रेरणा :
गणिनी आर्यिका
105 श्री स्वस्ति भूषण माताजी
ससंघ
पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में इन्द्र एवं अन्य पात्र बनने के लिए सम्पर्क करें।
सुधीर कुमार जैन 'एडवोकेट' 94140 50432
हेमन्त सौगानी 'एडवोकेट' 98290 64506
राजकुमार कोठ्यारी 94140 48432
निवेदक
पद्मपुरा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति
अन्तर्गत : प्रबन्ध समिति, श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा (बाड़ा), जयपुर, राजस्थान
सकल दिगम्बर जैन समाज पद्मपुरा एवं जयपुर (राजस्थान)
महोत्सव कार्यालय : एच-24, चितरंजन मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर 302 001 | मोबाईल नम्बर : 94140 48432, 98290 64506
क्षेत्रीय कार्यालय : बाड़ा पदमपुरा जयपुर 303 903 | मोबाईल नम्बर : 90579 03365

लायंस क्लब जयपुर स्पार्कल ने उत्सवों की थीम पर आयोजित की मासिक बैठक

जयपुर. शाबाश इंडिया। लायंस क्लब जयपुर स्पार्कल की जनवरी माह की मासिक बैठक दिनांक 9 जनवरी 2026 को होटल ग्रैंड सफारी में हर्षोल्लास के साथ आयोजित की गई। इस बैठक की विशेष बात यह रही कि इसे नव वर्ष, लोहड़ी, मकर संक्रांति और गणतंत्र दिवस की संयुक्त थीम पर मनाया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में क्लब द्वारा सभी सदस्यों का आत्मीय स्वागत किया गया। इस अवसर पर त्योहारों की खुशियां साझा करते हुए सदस्यों को उपहार स्वरूप पतंग, रेवड़ी, तिल के लड्डू और गणतंत्र दिवस के रिस्ट बैंड भेंट किए गए।

गौ-आधारित अर्थव्यवस्था से किसानों की आय दोगुनी करने का संकल्प: समाजसेवी नवीन कुमार भंडारी

जयपुर. शाबाश इंडिया

समाजसेवी नवीन कुमार भंडारी ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि भारत की आत्मा गाँवों में बसती है और गाँवों की समृद्धि सीधे तौर पर किसान की खुशहाली से जुड़ी है। उन्होंने बल देकर कहा कि यदि किसान सशक्त होगा तो राजस्थान सशक्त बनेगा, और राजस्थान की समृद्धि से ही संपूर्ण राष्ट्र सुदृढ़ होगा। श्री भंडारी ने प्रतिपादित किया कि किसानों की आय दोगुनी करने का सबसे प्रभावी, स्थायी और प्रामाणिक भारतीय मार्ग 'गौ-आधारित अर्थव्यवस्था' ही है। गौवंश से प्राप्त उत्पादों—जैसे गोबर, गोमूत्र, जैविक खाद, पंचगव्य, जैविक कीटनाशक, दीपक एवं धूप आदि—का उपयोग प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से किसानों की आय बढ़ाने में क्रांतिकारी भूमिका निभा सकता है। इससे न केवल खेती की लागत कम होती है, बल्कि अतिरिक्त आय के नए स्रोत भी सृजित होते हैं। उन्होंने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के विजन की सराहना करते हुए बताया कि उन्होंने गाय के गोबर को मात्र आस्था का विषय न रखकर, उसे एक सशक्त आर्थिक संसाधन के रूप में स्थापित किया है। स्वच्छ भारत मिशन, प्राकृतिक खेती और आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना में गोबर आधारित उत्पादों की महत्ता सर्वविदित है। समाजसेवी नवीन कुमार भंडारी ने आगे कहा कि राजस्थान में मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार भी इसी दिशा में गंभीरता से कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री का स्पष्ट संदेश है– 'किसान खुशहाल, तो राजस्थान खुशहाल; राजस्थान कुशल, तो संपूर्ण देश सशक्त।' इसी विजन के अनुरूप प्रदेश में गौ-आधारित उत्पादों, जैविक खेती और ग्रामीण स्वरोजगार को निरंतर बढ़ावा दिया जा रहा है। उन्होंने आह्वान किया कि आज समय की आवश्यकता है कि किसान केवल फसल उत्पादक न रहकर 'कृषि उद्यमी' बने। अंत में श्री भंडारी ने कहा कि गौ-सेवा केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि किसान कल्याण, पर्यावरण संरक्षण और राष्ट्र निर्माण का सशक्त आधार है।

गुदड़ी मंसूर खाँ जैन मंदिर में मनाया गया भगवान शीतलनाथ का जन्म-तप कल्याणक महोत्सव

आगरा. शाबाश इंडिया। आगरा शहर के प्राचीन श्री शीतलनाथ दिगंबर जैन मंदिर, गुदड़ी मंसूर खाँ में गुरुवार को दसवें तीर्थंकर भगवान शीतलनाथ के जन्म एवं तप कल्याणक के पावन अवसर पर धार्मिक आस्था और उल्लास का अद्भुत संगम देखने को मिला। इस अवसर पर श्री शीतलनाथ महामंडल विधान का भव्य आयोजन बड़ी श्रद्धा के साथ संपन्न हुआ। विधान का कुशल संचालन विधानाचार्य पं. रविंद्र जैन एवं पं. सौरभ जैन शास्त्री द्वारा विधिवत मंत्रोच्चारण एवं शास्त्रोक्त विधि के अनुसार किया गया। प्रातःकाल मूलनायक अतिशयकारी भगवान शीतलनाथ की शांतिधारा एवं अभिषेक का सौभाग्य इंद्र कुमार-ओंकार जैन एवं वीरेंद्र कुमार-विपिन जैन (नायक परिवार) को प्राप्त हुआ। इस मंगल अवसर को लेकर श्रद्धालुओं में विशेष हर्ष व्याप्त रहा। विधान के दौरान संपूर्ण वातावरण भक्ति, शांति और आध्यात्मिक ऊर्जा से ओत-प्रोत रहा। भगवान शीतलनाथ की शिक्षाओं—अहिंसा, संयम एवं तपस्या—पर प्रकाश डालते हुए विधानाचार्यों ने बताया कि प्रभु का तप कल्याणक आत्मशुद्धि एवं आत्मोद्धार का मार्ग प्रशस्त करता है। इस धार्मिक आयोजन में 'सृजन दर्शन मित्र मंडल' का विशेष सहयोग रहा, जिनके समर्पण से कार्यक्रम सुव्यवस्थित रूप से संपन्न हुआ। विधान में समाज के अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने सक्रिय सहभागिता निभाई। कार्यक्रम में मुख्य रूप से सुभाष जैन, राकेश जैन (पार्षद), वीरेंद्र जैन, प्रमोद जैन, रविंद्र जैन, विपिन जैन, राकेश जैन, अभिषेक जैन, विमल जैन, सुधांशु जैन, जितेंद्र जैन, प्रवेश जैन, संजीव जैन (चांदी वाले) सहित सुशीला जैन, कुसुम जैन, सुनीता जैन, अल्पना जैन, कांता जैन, मंजुला जैन, स्नेहलता जैन एवं बड़ी संख्या में जैन समाज के श्रद्धालु उपस्थित रहे। विधान के समापन पर भगवान शीतलनाथ से विश्व शांति, समाज कल्याण एवं आत्मिक उन्नति की मंगल कामना की गई। अंत में समाजजनों ने आयोजन की सराहना करते हुए भविष्य में भी ऐसे धार्मिक कार्यक्रमों को भव्य रूप देने का संकल्प लिया। **-शुभम जैन**

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com | weeklyshabaas@gmail.com

स्वर्गीय जैन संगीत सम्राट श्री नमजी जैन चैरिटेबल ट्रस्ट का हुआ गठन

बकानी (झालावाड़). शाबाश इंडिया

कुछ महान विभूतियाँ धरा पर जन्म लेकर इतिहास रच देती हैं और अपने कार्यों से जीवन को जीवंत बना जाती हैं। ऐसी ही एक महान शख्सियत थे जैन संगीत सम्राट स्वर्गीय नमजी जैन 'बकानी'। उन्होंने अपने जीवनकाल में 5000 से अधिक आध्यात्मिक भजनों की रचना की और संपूर्ण भारत के विभिन्न धार्मिक आयोजनों में अपनी सुमधुर आवाज और संगीत की लहरों से श्रोताओं को भक्ति रस में सराबोर किया।

उनकी प्रसिद्ध रचनाएं जैसे– बाजे कुंडलपुर में बधाई, थारी बाकडली झाड़या में रास्ता भुलाया म्हारा पारस जी, जीते नंगा मरते नंगा, चांदखेड़ी का राजा बाजे मंदिर पर बाजा रे और कालो-कालो सांवरो आज भी जैन समाज के कंठों में बसी हैं। नमजी जैन को आचार्य शांति सागर जी महाराज ने 'संगीत सम्राट' की उपाधि प्रदान की थी, वहीं बालाचार्य योगेंद्र सागर जी महाराज ने उन्हें 'जैन जगत का कोहिनूर' कहा था।

पांडुलिपियां और विडंबना

नमजी जैन द्वारा हस्तलिखित पांडुलिपियां उनके सुपुत्र राजकुमार जैन 'टिल्लू' के पास आज भी सुरक्षित हैं। श्री महावीर जी और केशोरायपाटन जैसे तीर्थों पर उनकी लिखी आरतियां ही गाई जाती हैं।

अतिशय क्षेत्र चांदखेड़ी से उनका विशेष लगाव था। विडंबना यह है कि वर्तमान में कई गीतकार उनकी रचनाओं से उनका नाम हटाकर स्वयं का नाम या 'सेवक' लिख देते हैं, जो कि साहित्यिक मयार्दा के विरुद्ध है।

ट्रस्ट का गठन और कार्यकारिणी:

राजकुमार जैन 'टिल्लू' की मंगल प्रेरणा से 'स्वर्गीय जैन संगीत सम्राट श्री नमजी जैन चैरिटेबल ट्रस्ट' का गठन किया गया है। ट्रस्ट की कार्यकारिणी इस प्रकार है:

संरक्षकः राजकुमार जैन 'टिल्लू'
अध्यक्षः आशीष जैन 'पप्पी' (कोटा)
सचिवः प्रतीक जैन 'इशू' (बूंदी)
कार्याध्यक्षः कविम जैन (झालरापाटन)

ट्रस्ट में महिम जैन (टीवी एंकर), राष्ट्रीय कवि अतुल जैन, अखिलेश जैन (पत्रकार), राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी पारस जैन 'पार्श्वमणि' (कोटा), धर्मेंद्र जैन (कोटा), हिमांशु जैन (बूंदी), भाग्येश जैन, नागेश जैन (नई दिल्ली), अनिल जैन, सुनील जैन (इंदौर), अवनीश जैन, कमल जैन सोनी, हंसराज भंडारी, विजय जैन एडवोकेट, इंजीनियर समन जैन, दिवाकर जैन और विवेक जैन सक्रिय रूप से जुड़े हैं।

पूर्व छात्र सेवा समिति का वार्षिक उत्सव

राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी पारस जैन 'पार्श्वमणि' ने बताया कि बकानी स्थित हायर सेकेंडरी स्कूल में आयोजित 'पूर्व छात्र सेवा समिति' के वार्षिक उत्सव के दौरान, चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से संगीत क्षेत्र की चार प्रतिभाओं को प्रशस्ति पत्र, माला, शाल और नकद राशि प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर क्षेत्र के गणमान्य नागरिक, व्यापारी और श्रेष्ठिगण उपस्थित थे।

- प्रस्तुतिः पारस जैन 'पार्श्वमणि' राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी (पत्रकार), कोटा

25 मंडलीय सिद्धचक्र महामंडल विधान का भव्य शुभारंभ

गिरारगिरी जी में मुनि संघ का मंगल प्रवेश, धार्मिक अनुष्ठानों से गूंजा क्षेत्र

ललितपुर. शाबाश इंडिया

श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र गिरारगिरी जी में 16 जनवरी से 23 जनवरी 2026 तक आयोजित होने वाले '25 मंडलीय 1008 सिद्धचक्र महामंडल विधान', श्री आदिनाथ स्वामी निवाणोत्सव, वार्षिक मेला, विश्व शांति महायज्ञ एवं भव्य रथोत्सव का शुभारंभ शुक्रवार को अत्यंत श्रद्धा और भक्ति के साथ हुआ। यह महोत्सव आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य मुनि श्री 108 समत्वसागर जी महाराज एवं मुनि श्री शीलसागर जी महाराज के पावन सान्निध्य में संपन्न हो रहा है। मुनि संघ का भव्य मंगल प्रवेशः 16 जनवरी को प्रातः मुनि श्री 108 समत्वसागर जी महाराज ससंघ का भव्य मंगल प्रवेश गिरारगिरी जी में गाजे-बाजे के साथ हुआ। इस अवसर पर पुराना गिरार (सेठ निवास) से भव्य घटयात्रा प्रारंभ हुई, जिसमें महिलाएं मस्तक पर मंगल कलश धारण कर भक्ति भाव से सम्मिलित हुईं।

धार्मिक क्रियाओं का विधिवत आयोजनः प्रचार मंत्री डॉ. सुनील संचय ने जानकारी देते हुए बताया कि शुभारंभ अवसर पर ध्वजारोहण, मंडप उद्घाटन एवं मंडप शुद्धि की विधियाँ संपन्न हुईं। धार्मिक विधि-विधानों का संचालन पंडित मनोज शास्त्री (बगरोही), पंडित देवेंद्र शास्त्री (मड़ावरा) तथा पंडित विकर्ष शास्त्री (सलेहा) द्वारा किया गया। अतिथियों द्वारा चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन के पश्चात मंगल कलश स्थापना, पाद प्रक्षालन एवं शास्त्र भेंट का पुण्य कार्य संपन्न हुआ।

मुनि श्री के प्रेरक प्रवचनः इस अवसर पर मुनि श्री 108 समत्वसागर जी महाराज ने अपने संबोधन में कहा– सिद्धचक्र महामंडल विधान केवल एक अनुष्ठान नहीं, अपितु आत्मा को सिद्धत्व की ओर अग्रसर करने का साधन है। श्रद्धा, ज्ञान और चारित्र का समन्वय ही मोक्षमार्ग का मूल है।

उन्होंने आगे कहा कि आज का मानव भौतिकता में उलझकर आत्मिक शांति से दूर होता जा रहा है। जैन धर्म का विधान, तप, संयम और अहिंसा व्यक्ति को आत्मकल्याण के साथ-साथ विश्व शांति का मार्ग दिखाते हैं।

विशेष अनुष्ठानः प्रवचनों के उपरांत नंदी मंगल, सकलीकरण, इंद्र प्रतिष्ठा एवं मंडप प्रतिष्ठा संपन्न हुई। सायंकालीन कार्यक्रमों में आचार्य भक्ति, श्रुत समाधान, भव्य महाआरती एवं शास्त्र स्वाध्याय के साथ रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर गिरारगिरी कमेटी के अध्यक्ष चक्रेश जैन, महामंत्री प्रदीप जैन, कोषाध्यक्ष मुकेश सिंघई, आयोजन समिति अध्यक्ष अनिल जैन, महामंत्री राजेश 'रज्जू', कोषाध्यक्ष दीपचंद्र जैन सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

अतिथियों को आमंत्रणः आयोजन हेतु कमेटी के पदाधिकारियों–अजित जैन, त्रिलोक जैन, डॉ. सुनील संचय एवं सुधीर जैन द्वारा जिलाधिकारी, पुलिस अधीक्षक, राज्यमंत्री मनोहर लाल पंथ, नगर पालिका अध्यक्ष सोनाली जैन सहित प्रमुख समाज श्रेष्ठियों को आमंत्रण पत्र भेंट किए गए।

जैन मिलन महिला त्रिशला शाखा द्वारा जरूरतमंदों को गर्म वस्त्रों का वितरण

भिंड. शाबाश इंडिया। सामाजिक संस्था भारतीय जैन मिलन की 'महिला त्रिशला शाखा' द्वारा सेवा कार्य के अंतर्गत अटेर रोड स्थित ईंट-भट्टों पर कार्यरत जरूरतमंद परिवारों को कड़ाके की ठंड से राहत पहुंचाने हेतु गर्म वस्त्र वितरित किए गए। मकर संक्रांति के पावन उपलक्ष्य में आयोजित इस सेवा कार्यक्रम में संस्था की ओर से कंबल, शॉल, स्वेटर व अन्य गर्म कपड़े वितरित किए गए। साथ ही, उपस्थित सभी लोगों को अल्पाहार (स्वल्पाहार) भी कराया गया। इस अवसर पर क्षेत्रीय संयोजिका वीरां राखी जैन, अध्यक्ष मीनू जैन, अनीता जैन सहित जैन मिलन महिला त्रिशला की पूरी टीम उपस्थित रही। सभी सदस्यों ने इस पुनीत कार्य में अपना सक्रिय सहयोग प्रदान किया।

-रिपोर्टः सोनल जैन

धुलियान (पश्चिम बंगाल) में निःशुल्क नेत्र जांच एवं ऑपरेशन शिविर संपन्न

धुलियान, मुर्शिदाबाद (प. बंगाल). शाबाश इंडिया। धुलियान दिगंबर जैन पंचायत ट्रस्ट एवं फरक्का लायन्स क्लब के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 13 जनवरी 2026 को एक विशाल निःशुल्क नेत्र जांच एवं ऑपरेशन शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर जैन कॉलोनी स्थित 'आचार्य विद्यासागर निलय' में संपन्न हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में जरूरतमंद लोगों ने अपनी आंखों की जांच कराई। शिविर के दौरान कुल 106 लोगों के आंखों की जांच की गई, जिनमें से 68 लोगों को मोतियाबिंद ऑपरेशन हेतु चयनित किया गया। उल्लेखनीय है कि धुलियान दिगंबर जैन पंचायत ट्रस्ट द्वारा संचालित 'जैन होम्योपैथिक दातव्य चिकित्सालय' पिछले 42 वर्षों से अनवरत निःशुल्क सेवाएं प्रदान कर रहा है। चिकित्सालय के मंत्री श्री सुरेंद्र सेठी ने इस अवसर पर कहा कि भविष्य में दातव्य सेवा का और अधिक आधुनिकीकरण किया जाएगा, ताकि क्षेत्र के अधिक से अधिक लोगों को बेहतर चिकित्सा सुविधाएं प्रदान की जा सकें। शिविर के सफल आयोजन में समाज के गणमान्य सदस्य साहिल झांझरी, कैलाश सेठी, मनोज बड़जात्या, संजय गंगवाल, ऋषि काला, महावीर प्रसाद काला, प्रदीप गंगवाल, आलोक काला, महेंद्र अजमेरा आदि उपस्थित रहे और अपनी सेवाएं प्रदान कीं।

- संकलनः संजय बड़जात्या

आस्था : एक अद्भुत शक्ति

आस्था मानव जीवन की वह अदृश्य शक्ति है, जो कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी मनुष्य को संबल प्रदान करती है। जब तर्क, साधन और प्रयास सीमित हो जाते हैं, तब आस्था ही वह दीपक बनती है जो आशा का प्रकाश फैलाती है। आस्था केवल ईश्वर में विश्वास तक सीमित नहीं है, बल्कि स्वयं पर, जीवन पर और मानवता पर भरोसा रखने का नाम भी आस्था है। आस्था मन को स्थिरता देती है। जीवन में जब असफलताएं, रोग, दुःख या निराशा घेर लेते हैं, तब आस्था व्यक्ति को टूटने नहीं देती। वह सिखाती है कि हर अंधेरी रात के बाद उजाला अवश्य आता है। यही कारण है कि आस्था रखने वाला व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य और सकारात्मकता बनाए रखता है। आस्था का संबंध कर्म से भी है। सच्ची आस्था वह नहीं जो केवल प्रार्थनाओं तक सीमित रहे, बल्कि वह है जो अच्छे कर्म करने की प्रेरणा दे। जब मनुष्य यह मानकर कार्य करता है कि उसका प्रत्येक कर्म किसी उच्च शक्ति या नैतिक मूल्य से जुड़ा है, तो उसके आचरण में शुद्धता और ईमानदारी स्वतः आ जाती है। समाज में आस्था आपसी प्रेम, सहयोग और सेवा की भावना को जन्म देती है। मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर या गुरुद्वारे केवल उपासना के स्थान नहीं, बल्कि मानवता, करुणा और समानता के संदेश के केंद्र हैं। आस्था हमें यह सिखाती है कि सभी प्राणी एक ही सृष्टि का हिस्सा हैं और सेवा ही सच्ची भक्ति है। अंततः यह कहा जा सकता है कि आस्था जीवन की रीढ़ है। यह हमें आशावादी बनाती है, कठिनाइयों में मार्ग दिखाती है और मनुष्य को भीतर से मजबूत बनाती है। आस्था के साथ किया गया हर प्रयास सार्थक होता है और जीवन को अर्थपूर्ण बनाता है।

— **अनिल माथुर ज्वाला-विहार, जोधपुर।**

दो दिवसीय कॉन्फ्रेंस में 'एआई' के प्रभाव, उपयोग और चुनौतियों पर हुआ मंथन

जयपुर. शाबाश इंडिया

बनीपार्क स्थित श्री एसएसजी पारीक पीजी महिला महाविद्यालय में आज आईक्यूएसी (IQAC) के अंतर्गत राजस्थान सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के तत्वावधान में 'इम्पैक्ट ऑफ एआई ऑन ह्यूमन सोसाइटी एंड साइंस एंड टेक्नोलॉजी' विषयक दो दिवसीय कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ हुआ।

कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि राजस्थान वित्त आयोग के अध्यक्ष अरुण चतुर्वेदी, मुख्य वक्ता यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी (जयपुर) की प्रो. डॉ. रश्मि जैन, राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक डॉ. गोविंद शरण, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के डिप्टी डायरेक्टर राजेश कुमार गर्ग, राजस्थान विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर डॉ. गोविंद पारीक, पारीक प्रबंध कार्यकारिणी समिति के सचिव लक्ष्मीकांत पारीक, उपाध्यक्ष एन.के. पारीक, संयुक्त सचिव गौरव पारीक, सदस्य के.के. पारीक एवं प्राचार्य डॉ. विजयलक्ष्मी पारीक ने दीप प्रज्ज्वलन कर किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि अरुण चतुर्वेदी ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के अतीत और वर्तमान उपयोग पर प्रकाश डालते हुए इसके लाभ और हानि के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि राजनीति, समाज और विकास के क्षेत्रों में एआई का महत्वपूर्ण योगदान है। मुख्य वक्ता डॉ. रश्मि जैन ने स्किल बेस्ड जॉब्स, चैटजीपीटी, डिजिटल स्कैम, डिजिटल अरेस्ट और 'विकसित भारत' के निर्माण में तकनीक की भूमिका पर विचार व्यक्त किए।

तकनीकी सत्रों की अध्यक्षता प्रो. डॉ. कृष्णा गुप्ता, डॉ. शुभा शर्मा और डॉ. पवनदीप कौर ने की। प्रथम सत्र में हर्षिता माहेश्वरी ने 'एआई और मानसिक स्वास्थ्य' पर शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए बताया कि कैसे एआई मानसिक स्वास्थ्य सहायता की बढ़ती मांग के लिए अनुकूल समाधान प्रदान कर सकता है। द्वितीय सत्र में 'डिजिटल युग में कला, साहित्य और संस्कृति का संरक्षण' विषय पर चर्चा करते हुए एआई को एक सेतु के समान बताया गया। साथ ही, बाजरा की फसल में फंगल रोगों के नियंत्रण और पोषण सुधार में एआई के उपयोग पर भी ध्यान आकर्षित किया गया। इस मौके पर पारीक पीजी कॉलेज के प्राचार्य डॉ. एन.एम. शर्मा, पारीक कॉलेज ऑफ एजुकेशन की प्राचार्य डॉ. प्रमिला दुबे एवं पारीक स्कूल की प्रधानाचार्य डॉ. चंदा शर्मा सहित कई शिक्षाविद उपस्थित रहे।

बुराई को बुरा मानकर पीना सीखें, बुराइयों में भी अच्छाइयां ढूंढें: मुनि श्री

आदिश्वर धाम सुभाषगंज में बड़े बाबा का होगा प्रथम महामस्तकाभिषेक भगवान के निर्वाण कल्याणक पर लाडू समर्पण के साथ होगा भक्तामर मंडल विधान: विजय धुर्रा

अशोकनगर. शाबाश इंडिया

संसारी प्राणी बुराई को देखकर दूसरों को दोषी ठहराता है और पुनः कर्मों का बंध करता चला जाता है। हमें कर्म की शुद्धि की ओर ध्यान देना चाहिए। भलाई-बुराई की सजा स्वयं कर्म देता है और कर्म की मार से कोई नहीं बच सकता। उक्त उद्गार सुभाषगंज में धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि श्री मेघदत्त सागर जी महाराज ने व्यक्त किए। मुनिश्री ने आगे कहा कि जगत में भले ही देखने में आए कि बुराई करने वाले का कुछ नहीं बिगड़ रहा, पर जब कर्म का उदय आता है तो कोई सहारा देने वाला नहीं मिलता। उन्होंने कहा कि जब कोई अच्छा कार्य करे तो केवल ताली न बजाएं, बल्कि ताली के साथ तालमेल भी बिठाएं। ताली सिर्फ समर्थन नहीं, बल्कि अभिव्यक्ति का माध्यम भी है। निर्वाण कल्याणक पर होगी दीप अर्चना: जैन समाज के मंत्री विजय धुर्रा ने बताया कि माघ कृष्ण चतुर्दशी (17 जनवरी) को प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के मोक्ष कल्याणक के अवसर पर आदिश्वर धाम के 'बड़े बाबा' भगवान आदिनाथ का मुनि संघ के सान्निध्य में प्रथम महामस्तकाभिषेक संपन्न होगा। इसके साथ ही श्री भक्तामर महामंडल विधान एवं विश्व शांति हेतु भगवान की महाशांतिधारा की जाएगी। जैन समाज के मंत्री शैलेंद्र श्रागर ने बताया कि सभी कार्यक्रम खुले मैदान में विधि-विधान के साथ संपन्न होंगे। शाम को 48 दीपों से महाअर्चना की जाएगी। समाज के अध्यक्ष राकेश कंसल, उपाध्यक्ष अजीत बरोदिया सहित कार्यकारिणी के सभी पदाधिकारियों ने श्रद्धालुओं से समय पर उपस्थित होकर धर्म लाभ लेने का अनुरोध किया है।